कानपुर, बुधवार, 15 अप्रैल, 2026
वर्षः 03, अंकः 94, पृष्ठः 8+4

सच्चाई के दम पर जोश के साथ...

swarajindia2023@gmail.com swarajindianews swarajindianews

ई-पेपर पढ़ने के लिए क्लिक करें
https://epaper.swarajindianews.com
Website: www.swarajindianews.com

सांध्यकालीन समाचार पत्र

स्वराज इंडिया

इनसाइड होर्मुज बना 'सीधी टक्कर' का डेंजर प्वाइंट...>Pg12

15 दिन बाद भी नहीं रुका अवैध निर्माण ...>Pg03

मूल्यः 2 ₹

पुराने वाहन अब नहीं होंगे कबाड़!

सरकार कर रही स्क्रैप पॉलिसी में सुधार की तैयारी, 10-15 साल पुराने फिट वाहनों को मिलेगा नया जीवन

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

नई दिल्ली। केंद्र सरकार जल्द ही वाहन स्क्रैप पॉलिसी में बड़ा बदलाव करने जा रही है। अब पुराने वाहनों को सीधे कबाड़ घोषित करने के बजाय उन्हें इलेक्ट्रिक या क्लीन फ्यूल (सीएनजी/एलएनजी) में बदलने का विकल्प देने की तैयारी है। इस नई सोच से लाखों वाहन मालिकों को राहत मिलने की उम्मीद है, जो अभी तक पुराने वाहन बदलने के दबाव में थे।

सरकार का मानना है कि 10 से 15 साल पुराने कई वाहन तकनीकी रूप से अभी भी सही हालत में होते हैं। ऐसे में उन्हें पूरी तरह खत्म करने के बजाय "रिट्रोफिटमेंट" यानी नई तकनीक से अपग्रेड करना ज्यादा उपयोगी और किफायती विकल्प हो सकता है। सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय इस प्रस्ताव पर तेजी से काम कर रहा है। योजना के तहत ट्रक, बस, टेम्पो और ट्रेवलर जैसे व्यावसायिक वाहनों में इलेक्ट्रिक किट लगाने पर आने वाले खर्च का 15 से 25 प्रतिशत तक हिस्सा सरकार खुद वहन कर सकती है। इससे छोटे ट्रांसपोर्टर और मध्यम वर्ग के लोगों को काफी राहत मिलेगी, क्योंकि नए वाहन खरीदना उनके लिए महंगा पड़ता है।

नई नीति में देशभर में अधिकृत रिट्रोफिटमेंट सेंटर खोलने की भी योजना है। इन केंद्रों पर ही प्रमाणित किट लगाई जाएंगी और उसके बाद वाहन को फिटनेस सर्टिफिकेट मिलेगा। यह सर्टिफिकेट पांच साल तक मान्य रहेगा, जिससे वाहन मालिक बिना किसी परेशानी के अपने वाहन का उपयोग कर सकेंगे। ऑटोमोटिव रिसर्च एसोसिएशन ऑफ इंडिया ने भी रिट्रोफिटमेंट किट के मानकों को तय करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है, ताकि सुरक्षा और गुणवत्ता से कोई समझौता न हो। विशेषज्ञों का कहना है कि मौजूदा स्क्रैप पॉलिसी की रफ्तार काफी धीमी है।

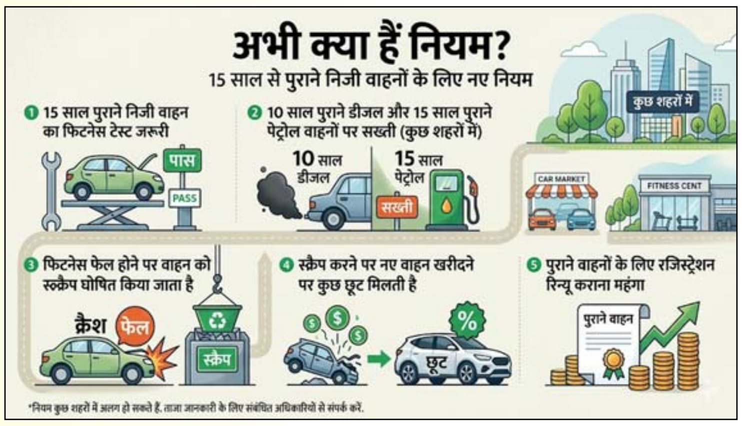

ऐसे में रिट्रोफिटमेंट एक बेहतर और व्यावहारिक विकल्प बन सकता है। इससे न केवल प्रदूषण कम होगा, बल्कि ऑटो सेक्टर में नए रोजगार के अवसर भी पैदा होंगे।

हालांकि, इस योजना के सामने कुछ चुनौतियां भी हैं। पुराने वाहनों में भारी बैटरी लगाने से संतुलन बिगड़ सकता है और ब्रेकिंग सिस्टम पर भी असर पड़ सकता है। इसलिए सरकार को सुरक्षा मानकों पर विशेष ध्यान देना होगा। देश में लगभग 2.44 करोड़ वाहन ऐसे हैं, जो स्क्रैप पॉलिसी के दायरे में आते हैं। अगर यह नई नीति लागू होती है, तो यह न केवल वाहन मालिकों के लिए राहतभरी खबर होगी, बल्कि ऑटोमोबाइल सेक्टर में एक बड़ा बदलाव भी लेकर आएगी। यह प्रस्ताव अगर लागू होता है, तो "कबाड़" बनने जा रहे लाखों वाहन फिर से सड़कों पर नए रूप में दौड़ते नजर आ सकते हैं।

- 10-15 साल पुराने फिट वाहन अब सीधे कबाड़ नहीं होंगे
- इलेक्ट्रिक या सीएनजी/एलएनजी में बदलने का विकल्प
- किट लगाने पर 15-25% तक सरकारी मदद संभव
- छोटे ट्रांसपोर्टर्स और मध्यम वर्ग को बड़ी राहत
- देशभर में खुलेंगे अधिकृत रिट्रोफिटमेंट सेंटर
- प्रदूषण कम करने और रोजगार बढ़ाने पर फोकस

सम्राट बने बिहार के 24वें मुख्यमंत्री, सियासी बदलाव के बीच नई सरकार की शुरुआत

नीतीश कुमार के इस्तीफे के बाद सत्ता परिवर्तन, विजय चौधरी व बिजेंद्र यादव बने डिप्टी सीएम

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

पटना। बिहार की राजनीति में बड़ा बदलाव सामने आया है। सम्राट चौधरी ने बुधवार को राज्य के 24वें मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेकर नई सरकार की शुरुआत कर दी। राजभवन के लोकभवन में आयोजित समारोह में राज्यपाल सैयद अता हसनैन ने उन्हें पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। इस मौके पर एनडीए के तमाम वरिष्ठ नेता, विधायक और कार्यकर्ता मौजूद रहे, जिससे कार्यक्रम का राजनीतिक महत्व और भी बढ़ गया।

नई सरकार में जदयू से विजय चौधरी और बिजेंद्र यादव ने भी शपथ ली और दोनों को उपमुख्यमंत्री बनाया गया है। पूर्व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार भी इस शपथ ग्रहण समारोह में मौजूद रहे। हालांकि अभी मंत्रिमंडल का पूर्ण विस्तार नहीं किया गया है, जिससे आगे और राजनीतिक हलचल की संभावना बनी हुई है।

शपथ ग्रहण से पहले सम्राट चौधरी ने पटना स्थित पंचमुखी हनुमान मंदिर में पूजा-अर्चना कर आशीर्वाद लिया। सुरक्षा के लिहाज से उनके कार्यक्रम को लेकर विशेष इंतजाम किए गए थे। उल्लेखनीय है कि यह राजनीतिक बदलाव नीतीश कुमार के इस्तीफे के बाद हुआ, जिन्होंने लगभग 20 वर्षों तक बिहार की सत्ता संभाली और अब वे राज्यसभा के सदस्य बन गए हैं।

सम्राट चौधरी वर्तमान में तारापुर से भाजपा विधायक हैं और 2017 में भारतीय जनता पार्टी में शामिल हुए थे। इससे पहले वे राजद और जदयू का भी हिस्सा रह चुके हैं। उनका राजनीतिक सफर लंबा और विविध अनुभवों से भरा रहा है। वर्ष 1999 में वे पहली बार मंत्री बने थे और राबड़ी देवी सरकार में कृषि मंत्री के रूप में कार्य किया था। उस समय उम्र को लेकर हुए विवाद के कारण वे सुर्खियों में भी आए थे।

सम्राट चौधरी ओबीसी वर्ग की कोइरी जाति से आते हैं और इस वर्ग से मुख्यमंत्री बनने वाले दूसरे नेता हैं। इससे पहले 1968 में सतीश प्रसाद सिंह ने यह पद संभाला था, लेकिन उनका कार्यकाल मात्र कुछ दिनों का ही रहा। सम्राट चौधरी ने एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है वे बिहार में उपमुख्यमंत्री और मुख्यमंत्री दोनों पदों पर रहने वाले चुनिंदा नेताओं में शामिल हो गए हैं। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह बदलाव बिहार की राजनीति में नई दिशा तय कर सकता है, खासकर आगामी चुनावों को ध्यान में रखते हुए। अब सबकी निगाहें नई सरकार के मंत्रिमंडल विस्तार और नीतिगत फैसलों पर टिकी हैं। नई सरकार के गठन के साथ बिहार की राजनीति एक नए दौर में प्रवेश कर चुकी है। अब देखना होगा कि सम्राट चौधरी अपनी नई भूमिका में राज्य को किस दिशा में आगे बढ़ाते हैं।

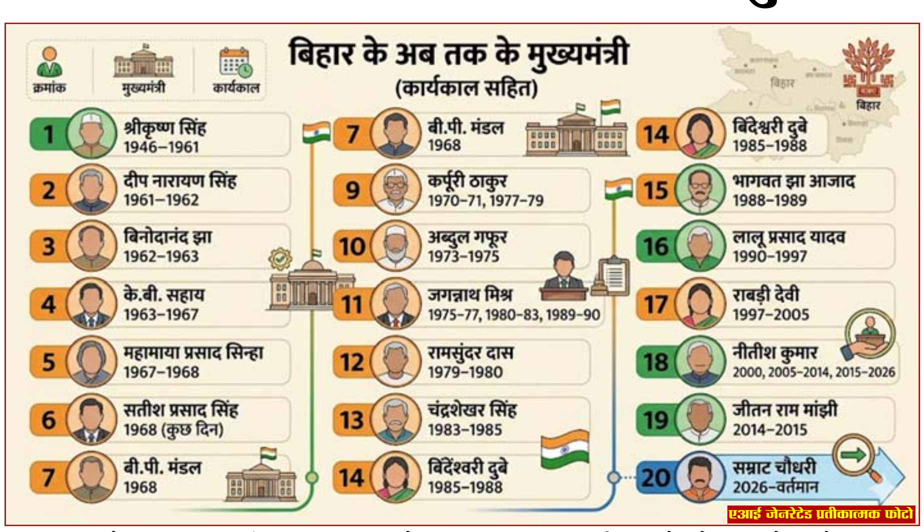

जरौली, मेहरबान सिंह पुरवा इलाके में ताबडतोड अवैध प्लाटिंग

» बिना लेआउट स्वीकृति के कृषि जमीनों में बेंचे जा रहे प्लॉट

» केडीए के सख्ती के बाद भी प्लॉटिंग माफिया बैखौफ

प्रमुख संवाददाता, स्वराज इंडिया

कानपुर। अवैध प्लाटिंग और निर्माण को लेकर केडीए वीसी मदन सिंह गर्ब्यियाल की सख्ती के बाद भी शहर में प्लाटिंग माफिया सक्रिय हैं। कृषि और अन्य आरक्षित जमीनों पर दनादन प्लाटिंग करके बिक्री की जा रही है। अस्थाई सडक और झामताम देखकर प्लाट खरीदने वाले नागरिक फंस रहे हैं। हालात यह है कि दक्षिण कानपुर में पांडुनदी के किनारे तक जमीन की बिक्री की जा रही है।

दक्षिण कानपुर के जोन-3 में जरौली और मेहरबान सिंह पुरवा इलाके में प्लाटिंग की दर्जनों से बडी बडी साइट चल रही हैं। जरौली में पटेल नगर के पास आराजी संख्या 811 में बडे पैमाने पर प्लाट बनाए गए हैं, सडकें भी बनाई गई हैं। इसका लेआउट केडीए से स्वीकृत नहीं कराया गया है। उद्धरण खतौनी में नाम देखने पर नगर समाज गृ,नि.स.लि.सचिव-सुरेंद्र सिंह पुत्र जमुना प्रसाद निवासी ग्राम खजुईपुर दिख रहा है लेकिन स्थानीय लोगों ने बताया कि वर्तमान में अंकित द्विवेदी नाम के व्यक्ति के द्वारा लाइनिंग की जा रही है।इसी तरह से पांडुनदी से पहले बाय साइड पर मेहरलॉन गेस्ट हाउस के पास आराजी संख्या 717, 718, 719, 732 में बडी तेजी से प्लाटिंग की जा रही हैं। यहां पर आने वाले खरीददारों को केडीए से अप्रूव्ड लेआउट बताया जाता है जब कि ऐसा नहीं है। इसके अलावा इसके आगे और पास में कृषि जमीनें प्लाटिंग माफियाओं के निशाने पर हैं। किसानों से तय एग्रीमेंट पर जमीन लेकर प्लाटिंग का उद्योग चलाया जा रहा है।

इस मामले में ओएसडी ब्रजेंद्र उपाध्याय ने बताया कि क्षेत्र में चल रही सभी प्लाटिंग का सर्वे कराया जा रहा है, अवैध प्लाटिंग चिन्हित करके ध्वस्ती करण की कार्रवाई जल्द की जाएगी। इसके लिए कई नोटिस जारी किए गए हैं।

KDA का नोटिस बना मजाक!

15 दिन बाद भी नहीं रुका अवैध निर्माण

प्राधिकरण की सख्ती पर सवाल

मुख्य संवाददाता, स्वराज इंडिया

कानपुर। कानपुर विकास प्राधिकरण (चष्ठ) की सख्ती के दावे एक बार फिर सवालों के घेरे में हैं। शहर के माथुरी मोहाल क्षेत्र स्थित सूतरखाना के भूखंड संख्या 70/71ए में अवैध निर्माण का मामला सामने आया है, जहां प्राधिकरण द्वारा नोटिस जारी किए जाने के बावजूद निर्माण कार्य बदस्तूर जारी है।

प्राधिकरण ने 26 फरवरी 2026 को भवन स्वामी आशु गुप्ता को नोटिस जारी कर स्पष्ट किया था कि बिना स्वीकृत मानचित्र के किया जा रहा निर्माण अवैध है। नोटिस में 15 दिनों के भीतर निर्माण हटाने के निर्देश दिए गए थे और चेतावनी दी गई थी कि समयसीमा के बाद प्राधिकरण स्वयं ध्वस्तीकरण कर खर्च की वसूली करेगा।

इसके बावजूद जमीनी हकीकत पूरी तरह उलट नजर आ रही है। मौके पर निर्माण कार्य न केवल जारी है, बल्कि तेजी से आगे बढ़ रहा है। इससे KDA की कार्रवाई पर गंभीर सवाल खड़े हो रहे हैं।

इलाके के निवासियों का कहना है कि नोटिस के बाद भी निर्माण न रुकना यह दर्शाता है कि या तो अधिकारियों की अनदेखी है या फिर कहीं न कहीं संरक्षण मिल रहा है। लोगों का कहना है कि यदि कार्रवाई का डर होता तो निर्माण तत्काल रुक जाता।

04 www.swarajindianews.com कानपुर, शुक्रवार, 03 अप्रैल, 2026 || कानपुर सिटी || स्वराज इंडिया

सुतरखाना में धर्मशाला को बनाया 'ओयो मॉडल'!

» हरबंस मोहाल थाना क्षेत्र के अंतर्गत सुतरखाना में अवैध निर्माण का खेल बेखौफ

» प्रशासन मौन, केडीए की कार्रवाई पर उठे सवाल - एक ही व्यक्ति पर बार-बार आरोप

यह इमारत कभी धर्मशाला हुआ करती थी लेकिन माफियाओं ने इसको होटल में बदल दिया

एक ही नाम, बार-बार विवाद

धर्मशाला या होटल? उठे गंभीर सवाल

हादसे का खतरा, लोगों में डर

⇨ सूतरखाना के भूखंड 70/71ए में धड़ल्ले से जारी निर्माण, नोटिस के बाद भी नहीं हुई कार्रवाई

प्राधिकरण की कार्यशैली पर उठे सवाल

सूत्रों के अनुसार, चष्ठ द्वारा पहले नोटिस जारी कर सख्ती दिखाई जाती है, लेकिन बाद में कार्रवाई ठंडे बस्ते में डाल दी जाती है। यही कारण है कि अवैध निर्माण करने वालों के हौसले बुलंद हैं और नियम-कायदों की खुलेआम अनदेखी की जा रही है।

बड़ा सवाल–कब चलेगा बुलडोजर?

अब सबसे बड़ा सवाल यह है कि जब नोटिस की समयसीमा समाप्त हो चुकी है, तब भी कार्रवाई क्यों नहीं हुई? क्या चष्ठ केवल कागजी कार्रवाई तक सीमित रहेगा या फिर इस अवैध निर्माण पर वास्तव में बुलडोजर चलेगा यह देखना बाकी है।

अब झुलसाएगी अप्रैल की धूप, इस हफ्ते 42 डिग्री पार कर सकता पारा

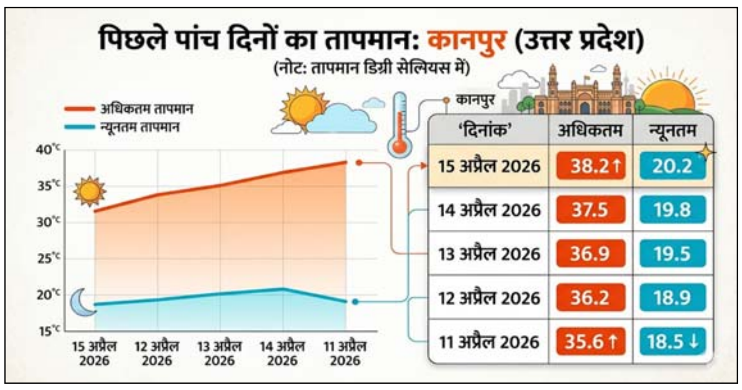

'दिनांक'	अधिकतम	न्यूनतम
15 अप्रैल 2026	38.2↑	20.2
14 अप्रैल 2026	37.5	19.8
13 अप्रैल 2026	36.9	19.5
12 अप्रैल 2026	36.2	18.9
11 अप्रैल 2026	35.6↑	18.5↓

प्रमुख संवाददाता, स्वराज इंडिया

कानपुर। अप्रैल का महीना अभी आधा भी नहीं बीता, लेकिन गर्मी ने अपने तीखे तेवर दिखाने शुरू कर दिए हैं। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार आने वाले दिनों में तापमान तेजी से बढ़ेगा और इसी सप्ताह अधिकतम तापमान 42 डिग्री सेल्सियस के पार पहुंचने की संभावना जताई जा रही है। आसमान साफ रहने और बारिश की कोई संभावना न होने के कारण धूप लगातार तीखी होती जा रही है।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर की ग्रामीण कृषि मौसम सेवा इकाई के अनुसार 15 अप्रैल को अधिकतम तापमान 38.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो सामान्य से 0.9 डिग्री अधिक है। वहीं न्यूनतम तापमान 20.2 डिग्री सेल्सियस रहा। दिन में सापेक्षिक आर्द्रता 65 प्रतिशत तक पहुंच रही है, जबकि न्यूनतम आर्द्रता 21 प्रतिशत तक गिर रही है, जिससे वातावरण में शुष्क गर्मी का प्रभाव बढ़ रहा है। मौसम विभाग के मुताबिक, अगले पांच दिनों तक आसमान पूरी तरह साफ रहेगा। इस दौरान वर्षा की कोई संभावना नहीं है, जिससे तापमान में और बढ़ोतरी तय मानी जा रही है। उत्तर-पश्चिम दिशा से चलने वाली हवाएं और तेज धूप मिलकर लू जैसे हालात पैदा कर सकती हैं।

गर्मी के बढ़ते प्रकोप का असर जनजीवन के साथ-साथ खेती पर भी पड़ने लगा है। विशेषज्ञों ने किसानों को सलाह दी है कि वे फसलों में नमी बनाए रखने के लिए हल्की सिंचाई करते रहें और दोपहर के समय खेतों में काम करने से बचें। वहीं आम नागरिकों को भी दोपहर में घर से बाहर निकलने से बचने, पर्याप्त पानी पीने और धूप से बचाव के उपाय अपनाने की सलाह दी गई है। यदि यही स्थिति बनी रही तो अप्रैल के अंतिम सप्ताह तक गर्मी अपने चरम पर पहुंच सकती है। ऐसे में आने वाले दिनों में हीट वेव (लू) का असर भी देखने को मिल सकता है।

37वीं वाहिनी पीएसी में एडीजी का दौरा निरीक्षण, उद्घाटन और जवानों से संवाद

प्रमुख संवाददाता, स्वराज इंडिया

कानपुर। 37वीं वाहिनी पीएसी परिसर में मंगलवार को अपर पुलिस महानिदेशक (hrSmr) मुख्यालय लखनऊ, आर.के. स्वर्णकार का गरिमामयी हुआ। इस दौरान उन्होंने वाहिनी का भ्रमण, निरीक्षण एवं नवनिर्मित भवन का उद्घाटन कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। पुलिस उपमहानिरीक्षक, पीएसी अनुभाग कानपुर, अतुल शर्मा व सेनानायक 37वीं वाहिनी, बीबी. चौरसिया ने पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका स्वागत किया।

कार्यक्रम के दौरान एडीजी ने वाहिनी परिसर में नवनिर्मित अतिथि गृह का विधिवत फीता काटकर लोकार्पण किया और परिसर के सौंदर्यीकरण व उपयोगिता की सराहना की। इसके बाद उन्होंने प्रशासनिक भवन, पुलिस मॉडर्न स्कूल, वाहिनी चिकित्सालय और परेड ग्राउंड सहित विभिन्न इकाइयों का सघन निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने कार्यप्रणाली में पारदर्शिता और अनुशासन बनाए रखने के निर्देश दिए।

दौरे का मुख्य आकर्षण 'सैनिक सम्मेलन' रहा, जिसमें एडीजी ने जवानों और प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे रिक्रूट आरक्षियों से सीधा संवाद किया। उन्होंने रिक्रूट्स से उनके प्रशिक्षण अनुभव साझा करने को कहा और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। साथ ही आगामी 'पासिंग आउट परेड' को सफल बनाने के लिए अधिकारियों को आवश्यक

नवनिर्मित अतिथि गृह का लोकार्पण, 'सैनिक सम्मेलन' में दिए महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश

दिशा-निर्देश दिए।

एडीजी ने जवानों की समस्याएं भी सुनीं और उनके समाधान के लिए उचित कदम उठाने का आश्वासन दिया। उन्होंने प्रशिक्षकों को परेड की तैयारियों को अंतिम रूप देने और अनुशासन व टर्न-आउट के उच्च मानकों को सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। इस अवसर पर उपसेनानायक तनु उपाध्याय (एडिशनल एसपी) चंद्रेश्वर, आरटीसी प्रभारी, मनोज कुमार श्रीवास्तव, सूबेदार सैन्य सहायक, रवेंद्र चौधरी सहित वाहिनी के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

ड्यूटी पर जान गंवाने वाले आरक्षी केशव यादव को नम आंखों से अंतिम विदाई

पुलिस लाइन में शोक का सन्नाटा, साथी की मत्यु पर दुखी नजर आए अफसर-सिपाही

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर देहात। कर्तव्य की राह पर चलते हुए अपनी जान न्योछावर करने वाले आरक्षी स्वर्गीय केशव यादव (30 वर्ष) को पुलिस लाइन, कानपुर देहात में पूरे राजकीय सम्मान के साथ नम आंखों से अंतिम विदाई दी गई। जैसे ही उनके पार्थिव शरीर को अंतिम सलामी दी गई, पूरा माहौल गम और शोक में डूब गया। हर आंख नम थी और हर दिल भारी।

थाना रसूलाबाद क्षेत्र की कहिंजरी पुलिस चौकी पर तैनात रहे केशव यादव, पुत्र मुन्नालाल यादव, निवासी बजरिया बरहान खांडा जनपद आगरा, 13 अप्रैल 2026 को ड्यूटी के दौरान एक दर्दनाक सड़क हादसे में शहीद हो गए थे।

सोमवार शाम वह सरकारी कार्य (समन तामील) से लौट रहे थे। ग्राम पहाड़ीपुर के पास पेट्रोल पंप के निकट एक तेज रफ्तार अज्ञात वाहन ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि उन्होंने मौके पर ही दम तोड़ दिया।इस दर्दनाक खबर ने पूरे पुलिस विभाग को झकझोर कर रख दिया। साथियों को जैसे ही घटना की जानकारी मिली, हर कोई स्तब्ध रह गया।

एक हंसमुख, कर्तव्यनिष्ठ और जिम्मेदार जवान को इस तरह खो देना पुलिस परिवार के लिए गहरा आघात है।

पुलिस लाइन में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में पुलिस अधीक्षक श्रद्धा नरेन्द्र पाण्डेय, अपर पुलिस अधीक्षक राजेश पाण्डेय, क्षेत्राधिकारीगण सहित बड़ी संख्या में पुलिस अधिकारी और जवान मौजूद रहे। सभी ने नम आंखों से अपने साथी को अंतिम विदाई दी। शहीद के सम्मान में गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया और पूरे राजकीय सम्मान के साथ अंतिम सलामी दी गई।

इस दौरान कई पुलिसकर्मियों की आंखों से आंसू छलक पड़े। साथी जवान अपने बीच के एक सच्चे सिपाही को खोने का दर्द बयां नहीं कर पा रहे थे। माहौल पूरी तरह शोकमग्न था, जहां हर कोई सिर्फ एक ही बात कह रहा था ÷एक बहादुर जवान हमसे बिछड़ गया।÷

इसके बाद पार्थिव शरीर को उनके पैतृक गांव, जनपद आगरा के लिए रवाना किया गया, जहां अंतिम संस्कार किया जाएगा।

आरक्षी केशव यादव वर्ष 2018 बैच के सिपाही थे और अपनी ड्यूटी के प्रति पूरी ईमानदारी और समर्पण के साथ कार्य कर रहे थे। उनकी असामयिक मृत्यु ने न केवल उनके परिवार, बल्कि पूरे पुलिस विभाग को गहरे शोक में डाल दिया है।

पुलिस विभाग ने शोक संतप्त परिवार के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि इस कठिन घड़ी में पूरा पुलिस परिवार उनके साथ खड़ा है। ईश्वर से प्रार्थना की गई कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें और परिजनों को हिम्मत दे।

अग्निशमन सुरक्षा सप्ताह
छात्रों को सिखाए गए आग से बचाव के तरीके

आरपीएस इंटर कॉलेज में अग्निशमन उपकरणों के सही उपयोग के बारे में बताया

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर देहात। अग्निशमन सुरक्षा सेवा सप्ताह के तहत रसूलाबाद कस्बे के आरपीएस इंटर कॉलेज में आयोजित जागरूकता कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं को आग लगने की स्थिति में बचाव के उपायों और उसे नियंत्रित करने के प्रभावी तरीकों की विस्तृत जानकारी दी गई।

कार्यक्रम के दौरान फायर स्टेशन थानापुरवा के प्रभारी हृदयेश सिंह के निर्देशन में एफएम शिव किशोर, दीपक कुमार, राजेश सिंह, शिव शंकर पटेल, अमित कुमार और प्रवीण कुमार की टीम ने विद्यार्थियों को फायर सिलेंडर सहित अन्य अग्निशमन उपकरणों के सही उपयोग के बारे में बताया। साथ ही मौके पर ही उपकरणों का प्रयोग कर आग बुझाने का लाइव प्रदर्शन किया गया, जिससे छात्रों को व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त हुआ।

अभियान के तहत टीम द्वारा क्षेत्र के विभिन्न स्कूलों व सार्वजनिक स्थलों पर लगातार जागरूकता फैलाने का कार्य किया जा रहा है। इस अवसर पर शिक्षकों व विद्यार्थियों को अग्नि सुरक्षा से संबंधित जन-जागरूकता पत्र भी वितरित किए गए। कार्यक्रम में प्रधानाचार्य डीपी शुक्ला, उप प्रधानाचार्य अजय पाल यादव, शिक्षक जितेंद्र त्रिपाठी, जेसी वर्मा, अवधेश पाल, बंगाली बाबू शुक्ला सहित विद्यालय का समस्त स्टाफ उपस्थित रहा।

ओवरलोड वाहनों और अवैध खनन पर पुलिस का चेकिंग अभियान

» अभियान के बाद पुलिस क्षेत्राधिकारी सौरभ वर्मा का काफिला कमलाबाग पहुंचा

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर देहात। जनपद में ओवरलोड वाहनों और अवैध खनन पर लगाम लगाने के लिए पुलिस अधीक्षक श्रद्धा नरेंद्र पांडेय ने सख्त रुख अपनाया है। एसपी के निर्देश पर पुलिस अफसरों ने मंगलवार देर रात विशेष अभियान चलाकर बड़े वाहनों की गहन जांच की, जिससे वाहन चालकों में हड़कंप मच गया।

मंगलवार रात करीब 11 बजे डेरापुर के पुलिस क्षेत्राधिकारी सौरभ वर्मा के नेतृत्व में झींझक चौकी प्रभारी उमेश शर्मा सहित पुलिस टीम नहरपुल झींझक पहुंची। यहां सिकंदरा-रसूलाबाद मुख्य मार्ग से गुजर रहे ट्रक और डंफर जैसे भारी वाहनों को रोककर सघन चेकिंग अभियान चलाया गया।अभियान के दौरान वाहन चालकों के कागजातों की बारीकी से जांच की गई। करीब एक घंटे से अधिक समय तक चले इस अभियान में प्रत्येक बड़े वाहन को रोककर पूछताछ की गई। इस दौरान गलत नंबर प्लेट पाए जाने पर सिकंदरा की ओर जा रहे एक डंफर का चालान किया गया। चेकिंग अभियान के चलते मार्ग से गुजरने वाले वाहन चालकों में अफरा-तफरी और हड़कंप का माहौल बना रहा। पुलिस की सख्ती को देखते हुए कई चालक सतर्क नजर आए।

अभियान के बाद पुलिस क्षेत्राधिकारी सौरभ वर्मा का काफिला कमलाबाग पहुंचा, जहां बाबा साहेब जयंती के अवसर पर आयोजित संगीत कार्यक्रम का निरीक्षण किया गया। उन्होंने मौके पर मौजूद लोगों से व्यवस्थाओं की जानकारी ली और सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। सीओ डेरापुर सौरभ वर्मा ने बताया कि कस्बा झींझक में विशेष वाहन चेकिंग अभियान चलाया गया, जिसमें ओवरलोड वाहनों समेत सभी बड़े वाहनों की जांच की गई। एक डंफर का चालान किया गया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस तरह के अभियान आगे भी लगातार जारी रहेंगे, ताकि नियमों का पालन सुनिश्चित कराया जा सके।

सम्पादकीय

हरित दृष्टिकोण का दिल्ली-देहरादून राजमार्ग

निस्संदेह, दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेसवे का उद्घाटन भारत के संरचनात्मक विकास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हो सकता है। जो राष्ट्रीय राजधानी और उत्तराखंड के प्रवेश द्वार के बीच यात्रा के समय को छह घंटे से घटाकर ढाई घंटे करने का वायदा करता है। मंगलवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा राष्ट्र को समर्पित यह एक्सप्रेसवे उत्तराखंड ही नहीं, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र व पश्चिमी उत्तर प्रदेश में उद्योग व पर्यटन को बढ़ावा देगा। इंजीनियरिंग की विशिष्ट उपलब्धि से बढ़कर, परियोजना राजमार्गों की कल्पना में एक बड़े बदलाव का संकेत भी है। जो महज एक सड़क ही नहीं है, बल्कि कई क्षेत्रों, बाजारों और अवसरों को जोड़ने वाला महत्वपूर्ण आर्थिक गलियारा भी है। इस राजमार्ग के बनने से जहां परंपरागत मार्गों पर ट्रैफिक का दबाव कम होगा, वहीं बेहतर कनेक्टिविटी से देहरादून और मसूरी आदि अन्य हिल स्टेशनों में पर्यटन बढ़ेगा। निस्संदेह, इससे पश्चिमी उत्तर प्रदेश में आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहन मिलेगा। पश्चिमी उ.प्र. के सहारनपुर व शामली जैसे जनपदों, जिन्हें विकास की दौड़ में पर्याप्त अवसर नहीं मिले, उनके लिये भी वरदान साबित हो सकता है। माना जा रहा है कि खाद्यान्न, भंडारण और रियल एस्टेट में भी इस परियोजना के लाभ नजर आएंगे। कह सकते हैं कि यह एक्सप्रेसवे भारतमाला जैसी परियोजनाओं के तहत एकीकृत, उच्च गति वाले गलियारों के लिये केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी योजना के लक्ष्यों को पूरा करता है। वहीं दूसरी ओर इस परियोजना की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसमें विकास और पारिस्थितिक संवेदनशीलता के मध्य सामंजस्य स्थापित करने का सार्थक प्रयास किया गया है। प्रतिष्ठित राजाजी पार्क क्षेत्र से गुजरने वाला यह ऊंचा वन्यजीव गलियारा, जिसमें वन्य जीवों के लिये अंडरपास बनाये गए हैं ताकि उनके प्राकृतिक आवागमन मार्गों में किसी तरह का व्यवधान पैदा न हो। जो इस मान्यता की कसौटी पर खरा उतरता है कि विकास के बुनियादी ढांचे को प्रकृति के अनुरूप तैयार किया जाना चाहिए।हाल के वर्षों में देश की विभिन्न बड़ी विकास योजनाओं वाले क्षेत्रों में वन्य जीवों और मनुष्य के बीच जो संघर्ष बढ़ा है, वो विकास को पर्यावरण व वन्यजीवों के अधिवास के अनुकूल ढालने की जरूरत बताता है। कर्नाटक के हाथी गलियारे- जो बांदीपुर,नागरहोल और आसपास के जंगलों को जोड़ते हैं, दर्शाते हैं कि कि कैसे संपर्क मार्गों से वन्य जीवों के प्रवास-मार्ग की सुरक्षा होती है। जिससे मानव व वन्य जीवों का संघर्ष कम होता है। ऐसे में यदि दिल्ली-देहरादून राजमार्ग में अभिनव प्रयास प्रभावी साबित होते हैं, तो यह नया एक्सप्रेसवे पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों में भविष्य की परियोजना के लिए एक आदर्श साबित हो सकता है। हालांकि, इस राजमार्ग को लेकर कुछ चिंताएं अभी बाकी हैं। राजमार्ग को पूरा करने के दौरान अंतिम समय में निर्माण कार्यों में किए गए सुधार और इसमें पहले हुई कुछ देरी की रिपोर्टों से कार्य निष्पादन की गुणवत्ता व समय सीमा के दबाव को लेकर सवाल भी उठे हैं। निस्संदेह, किसी संरचना के बुनियादी ढांचे का मूल्यांकन उद्घाटन की समय सीमा से नहीं बल्कि उसकी मजबूती, सुरक्षा उपायों और दीर्घकालिक पर्यावरणीय प्रभावों के आधार पर ही होना चाहिए। अंतत- यह एक्सप्रेसवे आशा और सावधानी दोनों का ही पर्याय है। निर्विवाद रूप से यह भारत की तेज और स्मार्ट निर्माण की महत्वाकांक्षा को भी दर्शाता है। निर्विवाद रूप से इस महत्वाकांक्षी परियोजना की वास्तविक सफलता इस बात पर भी निर्भर करेगी कि यह पारिस्थितिक और संरचनात्मक गुणवत्ता से समझौता किए बिना दक्षता को बनाये रखे।

आरक्षण और योग्यता के बीच संघर्ष कब तक ?

श्याम सिंह पंवार
वरिष्ठ पत्रकार

आरक्षण और योग्यता के बीच का संघर्ष, भारतीय समाज की एक ऐसी टीस है, जो समय के साथ कम होने के बजाय और गहरी होती जा रही है।

इसमें कतई दो राय नहीं कि ?योग्यता की बलिबेदी पर राजनीति का कुत्सित नीति से सराबोर खेल बदस्तूर जारी है। ?इसमें कतई दो राय नहीं कि, आज के दौर में योग्यता शब्द बेमानी होता जा रहा है।

एक तरफ वो युवा है जिसने रातों की नींद और सुख-चैन त्यागकर 90- 95त्न अंक हासिल किए, और दूसरी तरफ वो व्यवस्था है जो उसे सिर्फ इसलिए नकार देती है क्योंकि उसके पास जातीय आरक्षण रूपी सही हथियार नहीं है। यह केवल एक अवसर का नुकसान नहीं है, बल्कि एक मेधावी मस्तिष्क की सांस्थानिक हत्या है।

जब देश के सर्वोच्च संस्थानों में प्रवेश का आधार ज्ञान के बजाय जाति बन जाए, तो राष्ट्र का भविष्य अंधकारमय तय है। सामान्य जाति की संतानें अपनी ही मातृभूमि में दोयम दर्जे का नागरिक महसूस करने लगी हैं। नतीजा यह दिख रहा है कि हमारे देश की सबसे प्रखर बुद्धियाँ विदेशों का रुख कर रही हैं। ...और हम अपनी प्रतिभा को आरक्षण की आग में झोंक रहे हैं और फिर गर्व से कहते हैं कि फलानी कंपनी का सीईओ भारतीय है। वह भारतीय इसलिए सफल है क्योंकि उसे वहां उसकी जाति नहीं, उसकी काबिलियत के आधार पर चुना गया।

गौरतलब हो कि जातीय आरक्षण को एक अस्थायी व्यवस्था के रूप में लाया गया था ताकि वंचितों/ पिछड़ों को मुख्यधारा में लाया जा सके। लेकिन, सत्ता पाने का आज यह एक ऐसा राजनीतिक हथियार बन चुका है जिसे छूने की हिम्मत कोई दल नहीं करता। बल्कि हर चुनाव के साथ आरक्षण का दायरा बढ़ाया जाता है, जैसे यह कोई खैरात हो। योग्यता को दरकिनार कर केवल संख्या बल के आधार पर कुर्सियां बांटना देश के विकास की गति में लगाम लगाने जैसा है।

ऐसे में ज्वलंत सवाल यह उठता है कि कब तक असहनीय दंश का दर्द सहेगी आने वाली पीढ़ी?

एक सामान्य वर्ग का बच्चा स्कूल से निकलते ही इस कड़वी सच्चाई से टकराता है कि उसके मित्र को उससे कम मेहनत पर भी सब कुछ मिल जाएगा, जबकि उसे अपनी जगह बनाने के लिए असंभव को पार करना होगा। यह भेदभाव बच्चों के मन में व्यवस्था के प्रति घृणा और हताशा भर रहा है। सवाल यह भी उठता है कि क्या हम एक ऐसे समाज का निर्माण कर रहे हैं जहां न्याय केवल कागजों पर होगा?

ऐसे में व्यवस्था में सुधार की तत्काल आवश्यकता है। योग्यता की हत्या बंद होनी चाहिए। यदि हमें वास्तव में एक सशक्त राष्ट्र बनना है, तो सहायता का आधार आर्थिक स्थिति होनी चाहिए, न कि जाति।

समान अवसर का अर्थ सबको एक जैसी दौड़ में दौड़ाना है, न कि दौड़ने वाले के पैरों में जंजीर बांध देना।

आरक्षण का लाभ उन तक पहुँचना चाहिए जिन्हें वास्तव में जरूरत है, न कि उन्हें जो पीढ़ियों से इसका लाभ उठाकर संपन्न हो चुके हैं।जब तक हम प्रतिभा को परम नहीं मानेंगे, तब तक हम विश्वगुरु बनने का केवल सपना ही देख सकते हैं। सामान्य जाति की संतानों के सब्र का बांध टूट रहा है; समय आ गया है कि इस व्यवस्था पर पुनर्विचार किया जाए, वरना हम योग्यता की चिता पर ही भविष्य की नींव रखेंगे।

लोकतंत्र में महिलाओं को उचित हक दिलाने की पहल

नारी शक्ति वंदन क़ानून केवल एक अधिनियम नहीं, भारतीय समाज की उस सामूहिक चेतना का परिचायक है जो स्त्री-पुरुष समानता को हकीकत बनाना चाहती है। यह उस भारत की परिकल्पना है जहां माता-बहनें-बेटियां केवल घर की नहीं, राष्ट्र की भी नियति लिखेंगी। अधिनियम में सुधार तुरंत आने का चाव सम्पूर्ण महिला जगत में देखा जा रहा है। नारी वंदन क़ानून में सुधार एक उत्सव बन गया है। आगामी 16, 17, 18 अप्रैल की तिथियां भारतीय इतिहास में गौरवमयी स्वर्णिम अक्षरों में अंकित होने जा रही हैं। साल 2026 का बैसाखी का त्योहार एक नव पर्व के रूप में पल्लवित हो रहा है। ऐसा लग रहा था

विधायिका में महिला सहभागिता का अवसर 2034 के चुनाव के साथ अवतरित होगा। लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की समसामयिक पहल से यह अवसर 2029 में साकार हो रहा है। आगामी मंजिल पांच साल पहले आ रही है। चाव से भरी हुई देश की नारी शक्ति को बधाई! पंजाबी में एक फिल्म है– गोडे गोडे चाव। इस फिल्म की केंद्रीय कथा महिलाओं के पहली बार बारात चढ़ने की है। बारात में जाने में जब वे सफल होती हैं तब जिस चाव से उनके कदम उठ रहे हैं, उसे कथाकार ने 'गोडे गोडे चाव' कहा है। भारत की समस्त दल-नेत्रियों समेत जागरूक महिलाओं, महिला संगठनों व युवतियों में इस अधिनियम में सुधार तुरंत आने से वैसा ही गोडे गोडे चाव है। यानी यह चाव महिला जगत के सम्पूर्ण वातावरण में देखा जा रहा है। महिलाओं ने हर अधिकार वर्षों के संघर्ष से पाया है। जीवन हो, पोषण हो, शिक्षा हो, सम्पत्ति में हिस्सेदारी, मताधिकार, विभिन्न नौकरियों में सहभागिता-शताब्दियों की तपस्या, संघर्ष व धैर्य से अर्जित किए। दुनिया के विभिन्न देशों, समाजों व समुदायों की अलग-अलग धाराओं में आज भी महिलाएं काफी पीछे हैं। अनेक अधिकारों से वंचित व पीड़ाओं में भी हैं। वर्षों तक मां की कोख ही कब्र बनती रही

हैं। मेरे एक मित्र हैं विद्यार्थी परिषद में, 1990 के दशक में साथ काम करते थे, उन्होंने उस समय मुझे बताया उनकी भतीजी पहली बेटी है जो उनके गांव में ज़िंदा रखी गई है। मेरे लिये ये सुनना आंखें खोलने वाला था। हमारे भारत के ही एक हिस्से में ये स्थिति रही है। मैं चार बहनों, तीन बुवाओं और चार मौसियों के मध्य बड़ा हुआ था। लेकिन एक दशक पहले आधुनिक तकनीकों व पुत्र मोह की सोच से जब मां की कोख ही बेटियों के लिए कब्र बन रही थी तब हमारे बुरी तरह बिगड़े लिंगानुपात के कारण बेटियों के लिए करुणामय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने हरियाणा में पानीपत की भूमि पर आकर- 'हम बेटियों को बचायें'-इसके लिए झोली फैलाई थी। इस करुण कथा के समानांतर भारतीय महिलाएं अपने परिश्रम से हर जगह खुद को साबित भी कर रही थीं। अंतरिक्ष में, सेना में, खेलों में, विज्ञान में, उद्यमिता में, प्रशासन मे, हर क्षेत्र में उन्होंने अपनी क्षमता प्रदर्शित की। विज्ञान, प्रौद्योगिकी व सशस्त्र बलों तक खुद को बेहतर साबित किया। विधायिका में उनकी सहभागिता अभी हाशिये पर है। वर्तमान आंकड़ों पर दृष्टिपात करें तो विधानसभाओं में महिलाओं की संख्या 9 प्रतिशत से भी कम है। जबकि 543 सदस्यों वाली लोकसभा में महिला सांसदों की संख्या मात्र 14 प्रतिशत से कम है। वैश्विक स्तर पर भारत इस मामले में 140 से अधिक देशों से पीछे है। अब समय को भारतीय नेतृत्व ने पहचान लिया है कि राजनीति में भी नारी शक्ति को उसका उचित स्थान दें। सच्चा, समावेशी और सशक्त लोकतंत्र बिना महिलाओं की समान भागीदारी के अधूरा ही रहता है। महिलाएं शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, बाल विकास व महिला सुरक्षा जैसे मुद्दों पर गहरी समझ रखती हैं। जब वे खुद सांसद या विधायक बनती हैं तो नीतियां कागजी नहीं, बल्कि जमीन पर उतरती हैं। पंचायतों में जहां महिलाएं सत्ता में आईं, वहां बाल विवाह घटा, लड़कियों की शिक्षा बढ़ी और घरेलू हिंसा पर अंकुश लगा। अब यही प्रभाव पूरे देश स्तर पर दिखेगा।विश्व आर्थिक मंच की रिपोर्ट बताती है कि लैंगिक समानता से जीडीपी में 27 प्रतिशत की बढ़ोतरी हो सकती है। यह बिल आर्थिक विकास का इंजन बनेगा। साल 2047 में विकसित भारत के स्वप्न को भी साकार करेगा। नारी वंदन का यह फैसला केवल राजनीतिक समीकरण नहीं बदल रहा, बल्कि पूरे समाज की सोच बदल रहा है। चुनावी मैदान में महिला उम्मीदवारों की तलाश बढ़ेगी, पार्टियां उन्हें टिकट देंगी, परिवार समर्थन करेंगे।

बदहाली की कहानी खुद बयां कर रहा धौरसलार रेलवे स्टेशन

स्टेशन पर कई पैसेंजर ट्रेनों का ठहराव, फिर भी सुविधाओं का टोटा

छोटा स्टेशन होने का खामियाजा भुगत रही जनता

रोशनी,शौचालय व बैठने की समुचित व्यवस्था तक नहीं

रिज़वान कुरैशी / स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

बिल्हौर(कानपुर)। फर्रुखाबाद-कानपुर अनवरगंज पैसेंजर समेत इसी मार्ग की कई अन्य पैसेंजर ट्रेनें धौरसलार रेलवे स्टेशन पर नियमित रूप से रुकती हैं, लेकिन इसके बावजूद यहां यात्रियों को बुनियादी सुविधाएं तक नसीब नहीं हो रही हैं। पूर्वोत्तर रेलवे के इज्जतनगर मंडल के अंतर्गत आने वाले इस छोटे स्टेशन की बदहाली यात्रियों की परेशानी का बड़ा कारण बनी हुई है।

जानकारी के अनुसार छोटा स्टेशन होने के कारण यहां एक्सप्रेस ट्रेनों का ठहराव नहीं है, जिससे अधिकतर स्थानीय यात्री पैसेंजर ट्रेनों पर ही निर्भर रहते हैं। बावजूद इसके, स्टेशन पर सुविधाओं का अभाव समझ से परे है। स्टेशन पर यात्रियों के आवागमन के लिए सुरक्षित रास्ता तक नहीं है, जिससे लोगों को प्लेटफॉर्म तक पहुंचने में जोखिम उठाना पड़ता है। रात्रि के समय प्रकाश व्यवस्था न होने से स्थिति और गंभीर हो जाती है। अंधेरे के चलते यात्री खुद को असुरक्षित महसूस करते हैं। बैठने के लिए बनाई गई सीमेंट की बेंचें भी बदहाल स्थिति में हैं। दो में से एक बेंच पूरी तरह टूटी हुई है, जबकि दूसरी भी जर्जर हो चुकी है।

छांव के लिए लगाए गए टीन शेड की आधी चादरें गायब हैं, जिससे धूप और बारिश में यात्रियों को खुले में खड़ा रहना पड़ता है।

सबसे बड़ी समस्या शौचालय की है। स्टेशन पर इसकी समुचित व्यवस्था न होने से महिलाओं, बुजुर्गों और बच्चों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।स्थानीय लोगों और यात्रियों का कहना है कि कई बार रेलवे प्रशासन को शिकायत दी गई, लेकिन अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया। उनका आरोप है कि छोटे स्टेशनों की लगातार अनदेखी की जा रही है। ग्राम प्रधान ने बताया कि समस्या बड़ी है। कई बार लिखित समस्याओं के बारे में अवगत भी कराया लेकिन धरातल पर कोई कार्य नहीं हुआ। बताया जा रहा है कि ओवरब्रिज बनेगा जिसके बाद धौरसलार स्टेशन को अपडेट किया जाएगा

बरसात में झाड़ियों का कब्जा,स्टेशन परिसर में बढ़ता खतरा

धौरसलार रेलवे स्टेशन पर बरसात का मौसम आते ही पटरियों और परिसर में बड़ी-बड़ी झाड़ियां उग आती हैं। समय पर सफाई न होने के कारण झाड़ियां घनी होकर फैल जाती हैं, जिससे प्लेटफॉर्म और ट्रैक के आसपास दृश्यता प्रभावित होती है। यात्रियों को आने-जाने में दिक्कतों का सामना करना पड़ता है, वहीं हादसे की आशंका भी बनी रहती है। स्थानीय लोगों का कहना है कि यह समस्या हर साल सामने आती है, लेकिन रेलवे प्रशासन की ओर से नियमित सफाई व्यवस्था सुनिश्चित नहीं की जाती, जिससे स्थिति जस की तस बनी रहती है।

रेलवे स्टेशन पर इस तरह की अव्यवस्थाएं सीधे तौर पर यात्रियों के अधिकारों और सुरक्षा से जुड़ी हैं। उन्होंने कहा कि किसी भी स्टेशन पर यात्रियों के बैठने की समुचित व्यवस्था होना अनिवार्य है, लेकिन धौरसलार स्टेशन पर यह पूरी तरह नदारद है। टूटी बेंचें और जर्जर हालत यह दर्शाती हैं कि रखरखाव पर ध्यान नहीं दिया जा रहा। उन्होंने मांग की है कि स्टेशन पर पर्याप्त और सुरक्षित बैठने की व्यवस्था तत्काल सुनिश्चित की जाए, ताकि यात्रियों को बुनियादी सुविधा मिल सके।

महेंद्र कुमार कुशवाहा, एडवोकेट, पूर्व महामंत्री बिल्हौर बार एसोसिएशन

स्टेशन पर पैसेंजर ट्रेनों का ठहराव है, मामले की जानकारी लेकर टीम भेजकर मौके पर जांच कराई जाएगी और जो भी कमियां हैं,उन्हें दूर कराया जाएगा।

-संजीव शर्मा (वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक, इज्जतनगर मंडल)

इस संबंध में मुझे पहले जानकारी नहीं थी। आपके माध्यम से जानकारी मिली है। संबंधित विभाग से बात कर जल्द ही आवश्यक कार्रवाई कराई जाएगी।

-अशोक कुमार रावत (सांसद, मिश्रिख लोकसभा)

चौबेपुर में एक ही रात में तीन वारदात, सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल

- ज्वेलरी दुकानों के शटर तोड़कर लाखों का माल पार
- गांव में बंद कमरे को बनाया निशाना, नकदी लेकर फरार

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

चौबेपुर/बिल्हौर (कानपुर)। कस्बे व आसपास के क्षेत्र में मंगलवार रात चोरों ने ताबड़तोड़ वारदातों को अंजाम देकर पुलिस गश्त की पोल खोल दी। दो ज्वेलरी दुकानों समेत एक घर को निशाना बनाए जाने से इलाके में दहशत का माहौल है।

कस्बे में स्थित एक ज्वेलरी की दुकान का शटर तोड़कर चोर अंदर घुस गए और चांदी के आभूषणों के साथ नकली ज्वेलरी पर हाथ साफ कर दिया। चोरी गई सामग्री की कीमत करीब तीन लाख रुपये बताई जा रही है। वारदात के दौरान चोरों ने दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरों को भी नुकसान पहुंचाया, हालांकि कुछ फुटेज पुलिस के हाथ लगने की बात कही जा रही है।

इसी दौरान चोरों ने एक अन्य ज्वेलरी दुकान को भी निशाना बनाने का प्रयास किया। शटर तोड़कर अंदर घुसने की कोशिश की गई,

लेकिन किसी के जाग जाने की आहट मिलने पर चोर मौके से फरार हो गए। उधर, उसी रात क्षेत्र के एक गांव में बंद पड़े मकान के कमरे का ताला तोड़कर चोरों ने नकदी पार कर दी। घर के लोग किसी कार्यक्रम में गए हुए थे।

वापस लौटने पर कमरे का सामान बिखरा मिला और चोरी की जानकारी हुई। बताया गया कि मकान के अन्य हिस्सों में लोग रह रहे थे, जबकि बंद कमरे को ही निशाना बनाया गया। घटनाओं की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू कर दी। लगातार हुई इन वारदातों से स्थानीय लोगों में भय व्याप्त है। वहीं, लोगों ने रात्रि गश्त को लेकर भी सवाल उठाए हैं।

अम्बेडकर जयंती: जुलूस निकालने को लेकर बैरीसाल व मलखानपुर में तनाव, पुलिस व ग्रामीण आमने-सामने

बिना अनुमति जुलूस पर हुई नोकझोंक, सूझबूझ से टला बड़ा विवाद

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

रसूलाबाद, कानपुर देहात। अम्बेडकर जयंती के अवसर पर थाना क्षेत्र के बैरीसाल व मलखानपुर गांवों में बिना अनुमति जुलूस निकालने को लेकर तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गई। जुलूस में शामिल लोग और पुलिस आमने-सामने आ गए, जिससे कुछ देर के लिए माहौल गरमा गया। हालांकि पुलिस की सूझबूझ से स्थिति को संभाल लिया गया और बड़ा विवाद टल गया।

जानकारी के अनुसार, बैरीसाल गांव निवासी रामप्रकाश, सुरेश, पप्पू, जितेंद्र, सोनू, गोलू समेत कई लोग बिना प्रशासनिक अनुमति के जुलूस निकाल रहे थे। इसकी सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस ने जुलूस को रोकने का प्रयास किया, जिस पर ग्रामीणों और पुलिस के बीच नोकझोंक हो गई। स्थिति बिगड़ती देख पुलिस ने संयम बरतते हुए लोगों को समझाकर मामला शांत कराया।

इसी क्रम में मलखानपुर गांव में भी राजेश, धर्मेंद्र, मुकेश, शिवम, अरविंद, दीपक सहित अन्य ग्रामीणों द्वारा बिना अनुमति नए रास्ते से जुलूस निकालने को लेकर विवाद की स्थिति बन गई। सूचना पर वहां भारी पुलिस बल पहुंचा और लोगों को समझा-बुझाकर मामला शांत कराया गया।

पुलिस अधिकारियों के अनुसार, दोनों गांवों में स्थिति अब पूरी तरह नियंत्रण में है। किसी भी अप्रिय घटना से बचने के लिए क्षेत्र में लगातार पुलिस गश्त की जा रही है और लोगों से शांति बनाए रखने की अपील की गई है।

मूसानगर यमुना घाट की बदहाली बनी मानवता पर सवाल

अंतिम संस्कार जैसे पवित्र स्थल पर भी नहीं मिल रही सम्मानजनक सुविधाएं

शंकर सिंह/स्वराज इंडिया

कानपुर देहात। भोगनीपुर तहसील के मूसानगर स्थित यमुना घाट की हालत इन दिनों इतनी दयनीय हो चुकी है कि यह न सिर्फ प्रशासनिक लापरवाही का आईना बन गई है, बल्कि मानवता और संवेदनशीलता पर भी बड़ा प्रश्नचिह्न खड़ा कर रही है। यह घाट क्षेत्र का प्रमुख अंतिम संस्कार स्थल है, जहां प्रतिदिन सैकड़ों की संख्या में लोग अपने परिजनों को अंतिम विदाई देने पहुंचते हैं। लेकिन दुख की इस घड़ी में उन्हें राहत नहीं, बल्कि अव्यवस्थाओं और परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

भीषण गर्मी के इस दौर में जब तापमान 40 डिग्री सेल्सियस से ऊपर पहुंच रहा है, तब घाट पर छाया के नाम पर कोई समुचित व्यवस्था नहीं है। न टिन शेड, न पेड़-पौधों की पर्याप्त छांव–ऐसे में लोग तपती धूप के नीचे घंटों खड़े रहने को मजबूर हैं। सबसे ज्यादा परेशानी बुजुर्गों, महिलाओं और छोटे बच्चों को झेलनी पड़ रही है, जिनकी हालत कई बार बिगड़ जाती है।पेयजल की समस्या भी यहां बेहद गंभीर है। घाट पर स्वच्छ और ठंडे पानी की कोई व्यवस्था नहीं है। एकमात्र हैंडपंप शौचालय के पास लगा हुआ है, जिससे पानी लेने में भी लोग असहज महसूस करते हैं। कई बार हैंडपंप भी खराब रहता है, जिससे स्थिति और बदतर हो जाती है। ऐसे में लोग या तो अपने साथ पानी लाने को मजबूर होते हैं या फिर प्यास से जूझते रहते हैं।बैठने की कोई समुचित व्यवस्था नहीं होने के कारण लोग जमीन पर बैठने या खड़े रहने को विवश हैं। वहीं घाट परिसर में चारों ओर फैली गंदगी, कूड़े के ढेर और बदबूदार वातावरण शोकग्रस्त लोगों की पीड़ा को और बढ़ा देता है। सफाई व्यवस्था पूरी तरह चरमराई हुई है, जिससे संक्रमण और बीमारियों का खतरा भी बना रहता है।शौचालय का निर्माण तो कराया गया है, लेकिन उसकी हालत इतनी खराब है कि

लोग उसका उपयोग करने से बचते हैं। साफ-सफाई और पानी की कमी के कारण शौचालय बदबू का अड्डा बन चुका है। मजबूरी में लोगों को खुले में शौच जाना पड़ता है, जो न केवल असुविधाजनक है बल्कि स्वास्थ्य के लिए भी गंभीर खतरा है।स्थानीय ग्रामीणों का कहना है कि इस गंभीर समस्या को लेकर कई बार प्रशासन का ध्यान आकर्षित किया गया। ब्लॉक और जिला स्तर के अधिकारी मौके पर पहुंचे भी, लेकिन हर बार केवल निरीक्षण कर औपचारिकताएं पूरी कर ली गईं। जमीनी स्तर पर आज तक कोई ठोस सुधार कार्य नहीं किया गया है। इससे यह साफ होता है कि जिम्मेदार अधिकारी इस मुद्दे को लेकर पूरी तरह उदासीन हैं।घाट पर न तो पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था है और न ही सुरक्षा के कोई पुख्ता इंतजाम। शाम होते ही यहां अंधेरा छा जाता है, जिससे लोगों को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। बरसात के दिनों में स्थिति और भी भयावह हो जाती है, जब कीचड़ और फिसलन के कारण अंतिम संस्कार करना भी मुश्किल हो जाता है। यह स्थिति न केवल प्रशासनिक तंत्र की असफलता को दर्शाती है, बल्कि आमजन की बुनियादी जरूरतों के प्रति लापरवाही को भी उजागर करती है।क्षेत्रवासियों ने जिला प्रशासन से कड़े शब्दों में मांग की है कि मूसानगर यमुना घाट पर तत्काल प्रभाव से टिन शेड का निर्माण, स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था, बैठने के लिए बेंच, शौचालयों का सुधार, नियमित साफ-सफाई, प्रकाश व्यवस्था और सुरक्षा के इंतजाम किए जाएं। साथ ही लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई सुनिश्चित की जाए।लोगों का कहना है कि यदि जल्द ही इस दिशा में ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो जनआक्रोश बढ़ना तय है और वे आंदोलन करने को मजबूर होंगे। मूसानगर यमुना घाट की यह बदहाली अब प्रशासन के लिए एक बड़ा सवाल बन चुकी है क्या जिम्मेदार अब भी जागेंगे या आमजन की पीड़ा यूं ही अनसुनी कर दी जाएगी?

खारा पानी बना संकट, जांच के बाद भी नहीं बदले हालात

स्वराज इंडिया
पानी के लिए 'पानी की तरह' बहे करोड़ों फिर भी गांव प्यासा

» हर घर जल योजना पर उठे सवाल, ग्रामीणों में आक्रोश

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर देहात। विकास खंड रसूलाबाद के दया गांव में ÷हर घर जल÷ मिशन के तहत बनी पानी की टंकी को लेकर उठे सवाल थमने का नाम नहीं ले रहे हैं। करीब तीन सप्ताह पहले सामने आई समस्या पर प्रशासन की सक्रियता के बावजूद जमीनी हालात अब भी जस के तस बने हुए हैं। टंकी से सप्लाई हो रहा खारा और

चिपचिपा पानी आज भी ग्रामीणों के लिए परेशानी का सबब बना हुआ है।

23 मार्च को स्वराज इंडिया में मामला उजागर होने के बाद अधिकारियों ने पानी के सैंपल लेकर जांच के लिए भेजा था, लेकिन अब तक न तो रिपोर्ट सार्वजनिक हुई है और न ही कोई ठोस समाधान सामने आया है। इस बीच गांव में त्वचा रोगों के मामले लगातार बढ़ रहे हैं। बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक को खुजली, चकत्ते और जलन जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

FOLLOW UP

ग्रामीणों का कहना है कि हालात इतने खराब हैं कि पशु भी इस पानी को पीने से बच रहे हैं। मजबूरी में लोग दूर-दराज के हैंडपंपों, कुओं और निजी जल स्रोतों का सहारा ले रहे हैं। कई परिवारों को पानी खरीदकर अपनी जरूरतें पूरी करनी पड़ रही हैं, जिससे आर्थिक बोझ भी बढ़ रहा है।

लंबे समय से शिकायतों के बावजूद समस्या का स्थायी समाधान न होने से ग्रामीणों में नाराजगी बढ़ती जा रही है। उनका कहना है कि योजना का उद्देश्य शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराना था, लेकिन यहां उल्टा असर देखने को मिल रहा है। फिलहाल जिम्मेदार अधिकारी जांच रिपोर्ट आने का इंतजार करने की बात कह रहे हैं, लेकिन गांव में पेयजल संकट गहराता जा रहा है। अब सबकी नजर इस बात पर टिकी है कि रिपोर्ट के बाद प्रशासन ठोस कार्रवाई करता है या यह मामला भी कागजी कार्रवाई तक सीमित रह जाता है।

लापरवाही का अंजामः लोडर की चपेट में आई मासूम, मौके पर मौत

गजनेर सब्जी मंडी में खेलते समय हुआ हादसा, पीछे करते लोडर ने ली दो वर्षीय बच्ची की जान

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर देहात । गजनेर कस्बे की सब्जी मंडी क्षेत्र में मंगलवार सुबह लापरवाही ने एक मासूम की जिंदगी छीन ली। खेलते-खेलते दो वर्षीय बच्ची अचानक पीछे हो रहे लोडर की चपेट में आ गई, जिससे उसकी मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। घटना के बाद पूरे इलाके में अफरा-तफरी मच गई और परिजनों में कोहराम छा गया।

मिली जानकारी के अनुसार, गजनेर निवासी सुमित सब्जी मंडी के पास परिवार सहित रहते हैं। मंगलवार सुबह वह कानपुर सब्जी मंडी से आलू लेकर लौटे थे और एक व्यापारी के यहां माल उतार रहे थे। इसी दौरान उनकी दो वर्षीय बेटी पास में अन्य बच्चों के साथ खेल रही थी। माल खाली करने के बाद चालक ने जैसे ही लोडर को पीछे किया, बच्ची अचानक वाहन के पीछे आ गई और उसकी चपेट में आ गई। हादसे के बाद मौके पर चीख-पुकार मच गई। आसपास मौजूद लोगों ने तत्काल बच्ची को उठाकर सीएचसी गजनेर पहुंचाया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मासूम की मौत की खबर सुनते ही मां का रो-रोकर बुरा हाल हो गया, वहीं परिवार के अन्य सदस्य भी बदहवास हो उठे।

घटना के बाद चालक मौके से फरार हो गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने मौके का निरीक्षण कर जांच शुरू कर दी है। थाना प्रभारी ने बताया कि प्रथम दृष्ट्या मामला लापरवाही से वाहन चलाने का प्रतीत हो रहा है। परिजनों की तहरीर मिलने के बाद चालक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उसकी तलाश की जा रही है।

अंबेडकर जयंती पर पाबंदी धड़ल्ले से बिक रही थी शराब

» डीघ गांव में छापेमारी में 30 क्वार्टर बरामद

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर देहात। भोगनीपुर थाना क्षेत्र में प्रतिबंध के बावजूद अवैध शराब बिक्री का खेल थमने का नाम नहीं ले रहा है। ताजा मामला डीघ गांव का है, जहां आबकारी विभाग की छापेमारी में परचून की दुकान से 30 क्वार्टर देसी शराब बरामद की गई। कार्रवाई के दौरान आरोपी युवक मौके से फरार हो गया, जबकि विभाग ने उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है।

जानकारी के अनुसार, भोगनीपुर आबकारी इंस्पेक्टर सुशील कुमार मंगलवार शाम टीम के साथ क्षेत्र में इसी दौरान उन्हें सूचना मिली कि डीघ गांव में घर के अंदर संचालित एक परचून की दुकान से चोरी-छिपे शराब बेची जा रही है। सूचना मिलते ही टीम ने मौके पर दबिश दी।

छापेमारी के दौरान दुकान की तलाशी लेने पर 30 क्वार्टर देसी शराब बरामद हुई। हालांकि कार्रवाई की भनक लगते ही आरोपी युवक मौके से भागने में सफल रहा। आबकारी इंस्पेक्टर ने बताया कि डॉ. भीमराव आंबेडकर जयंती के अवसर पर शासन द्वारा शराब बिक्री पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया गया था, बावजूद इसके अवैध रूप से शराब बेची जा रही थी।

अन्य गांवों में भी चल रहा अवैध कारोबार!

सूत्रों की मानें तो भोगनीपुर तहसील क्षेत्र के कई अन्य गांवों में भी चोरी-छिपे शराब की बिक्री जारी है।

विभागीय कार्रवाई के बावजूद यह अवैध कारोबार लगातार पैर पसारता नजर आ रहा है। स्थानीय लोगों का कहना है कि यदि समय रहते सख्ती नहीं बढ़ाई गई तो यह समस्या और गंभीर हो सकती है।

हादसे की आशंकाः गड्ढे में मिला किसान का शव, पास में पड़ी थी बाइक

बाइक नंबर के आधार पर मृतक की पहचान की गई

मौके पर लगी लोगों की भीड़

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर देहात माती। गजनेर थाना क्षेत्र के सरवनखेड़ाझ्मनेथू मार्ग पर लोहरी गांव के पास एक किसान का शव सड़क किनारे गड्ढे में मिलने से सनसनी फैल गई। शव के पास ही उसकी बाइक भी पड़ी मिली। सूचना पर पहुंची पुलिस ने जांच शुरू कर दी। बाइक नंबर के आधार पर मृतक की पहचान रेउना थाना क्षेत्र के रठिगांव निवासी 45 वर्षीय किसान दयाशंकर यादव के रूप में हुई। बताया जा रहा है कि वह मंगलवार दोपहर बाइक से घर से निकले थे और लोहरी गांव के पास मोड़ पर पहुंचने के दौरान हादसे का शिकार हो गए।प्राथमिक जांच में आशंका जताई जा रही है कि मोड़ पर बाइक अनियंत्रित होकर सड़क किनारे गड्ढे में जा गिरी, जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई। खेतों में काम कर रहे किसानों ने जब बाइक और शव देखा तो तुरंत पुलिस को सूचना दी, जिसके बाद मौके पर भीड़ जमा हो गई।

पुलिस और फोरेंसिक टीम ने मौके पर पहुंचकर साक्ष्य जुटाए और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। बाइक नंबर के जरिए परिजनों को सूचना दी गई, जिससे परिवार में कोहराम मच गया। परिजनों के अनुसार, दयाशंकर यादव रिश्तेदारी में जाने की बात कहकर घर से निकले थे। पुलिस का कहना है कि प्रथम दृष्ट्या मामला सड़क हादसे का प्रतीत हो रहा है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के वास्तविक कारण स्पष्ट हो सकेंगे।

अंबेडकर जयंती पर सपा नेताओं ने किया संविधान के आदर्शों पर चलने का आह्वान

» जिलाध्यक्ष वीरसेन यादव बोले, बाबा साहब ने अंतिम पंक्ति के व्यक्ति को दिलाया न्याय

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर देहात । गजनेर कस्बे में बाबा भीमराव अंबेडकर की जयंती के अवसर पर समाजवादी पार्टी के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम में समाजवादी पार्टी के प्रांतीय नेता एवं जिला अध्यक्ष वीर सेन यादव मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए।

इस दौरान वीर सेन यादव ने बाबा साहब के जीवन, संघर्ष और उनके द्वारा रचित संविधान की महत्ता पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि डॉ. भीमराव अंबेडकर ने समाज के अंतिम छोर पर खड़े वंचित वर्ग को न्याय दिलाने का कार्य किया और देश को एक मजबूत संविधान प्रदान किया, जो सभी वर्गों के अधिकारों की रक्षा करता है। कार्यक्रम में गजनेर ग्राम सभा के प्रधान फिरोज अहमद ने मुख्य अतिथि वीर सेन यादव को बाबा साहब की प्रतिमा भेंट कर सम्मानित किया। इस मौके पर मोहम्मद वसीम, युवा नेता मोहित गुप्ता, राम शंकर प्रजापति, मयंक त्रिवेदी, बृजेश कुमार गौतम समेत कई कार्यकर्ताओं और स्थानीय लोगों ने भी बाबा साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया।

कार पलटने से युवक की दर्दनाक मौत, दूसरा जिंदगी से जूझ रहा

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर देहात। रायपुरड्डगजनेर मार्ग पर श्यामपुर गांव के समीप बीती रात तेज रफ्तार का कहर देखने को मिला, जब एक अनियंत्रित कार बिजली के पोल से टकराने के बाद गहरे खड्डे में जा पलटी। इस भीषण हादसे में कार सवार दो युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। मौके पर पहुंची पुलिस ने दोनों को तत्काल एंबुलेंस के जरिए मेडिकल कॉलेज भिजवाया, जहां डॉक्टरों ने एक युवक को मृत घोषित कर दिया, जबकि दूसरा अभी जिंदगी और मौत के बीच संघर्ष कर रहा है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, रनिया थाना क्षेत्र के पहाड़पुर गांव निवासी अभिषेक सिंह (22) पुत्र रामू सिंह अपने मामा के लड़के धीरेंद्र सिंह (निवासी हमीरपुर) के साथ कार से कहीं जा रहे थे। देर रात जैसे ही उनकी कार श्यामपुर गांव के पास पहुंची, तेज रफ्तार के कारण चालक वाहन पर नियंत्रण नहीं रख सका। कार पहले सड़क

किनारे लगे बिजली के पोल से टकराई और फिर उछलकर खड्डे में पलट गई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि कार के परखच्चे उड़ गए और उसमें सवार दोनों युवक बुरी तरह घायल हो गए।

हादसे की सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंची और राहत एवं बचाव कार्य शुरू कराया। दोनों घायलों को तत्काल मेडिकल कॉलेज भेजा गया, जहां ड्यूटी पर मौजूद चिकित्सकों ने जांच के बाद अभिषेक सिंह को मृत घोषित कर दिया। वहीं धीरेंद्र सिंह का इलाज जारी है और उसकी हालत गंभीर बताई जा रही है।

घटना की जानकारी मिलते ही मृतक के परिजनों में कोहराम मच गया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और आगे की विधिक कार्रवाई की जा रही है। थाना प्रभारी दिनेश कुमार गौतम ने बताया कि फिलहाल मामले में कोई तहरीर प्राप्त नहीं हुई है। तहरीर मिलने पर आवश्यक कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

इस दर्दनाक हादसे ने एक बार फिर सड़क सुरक्षा और तेज रफ्तार के खतरों को उजागर कर दिया है। आए दिन हो रहे ऐसे हादसे यह साबित कर रहे हैं कि थोड़ी सी लापरवाही भी जिंदगी पर भारी पड़ सकती है।

अभिषेक सिंह की मौत से उसके परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है। वह अपने पिता का इकलौता बेटा था और परिवार की उम्मीदों का सहारा भी था।

शादी का झांसा देकर दुष्कर्म करने वाला आरोपी गिरफ्तार

मूसानगर पुलिस की त्वरित कार्रवाई, न्यायालय में किया जाएगा पेश

» स्वराज इंडिया न्यूज़ ब्यूरो

कानपुर देहात। जनपद में महिला संबंधी अपराधों पर अंकुश लगाने के लिए चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत थाना मूसानगर पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार कर महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है। आरोपी पर शादी का झांसा देकर दुष्कर्म करने का आरोप है।

पुलिस के अनुसार, 11 अप्रैल को पीड़िता की लिखित तहरीर के आधार पर थाना मूसानगर में मु0अ0सं0 034/2026 के तहत भारतीय न्याय संहिता की धारा 69/115(2) में मोहित सिंह, निवासी ग्राम कैलाशपुर पुलन्दर के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया था। मामले को गंभीरता से लेते हुए पुलिस ने त्वरित जांच शुरू की और साक्ष्य जुटाते हुए मंगलवार को आरोपी को देहली मोड़ क्षेत्र से गिरफ्तार कर लिया।

गिरफ्तार आरोपी की उम्र 24 वर्ष बताई जा रही है। पुलिस ने उसे नियमानुसार न्यायालय में पेश करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। इस कार्रवाई में प्रभारी निरीक्षक रीना गौतम के नेतृत्व में हेड कांस्टेबल प्रमोद कुमार अग्निहोत्री और हेड कांस्टेबल विपिन कुमार की टीम शामिल रही। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि महिला सुरक्षा के प्रति किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी और ऐसे मामलों में सख्त कार्रवाई जारी रहेगी।

तिश्ती में गेहूं की फसल में लगी आग, 30 बीघा फसल जलकर राख

लेखपाल ने किया नुकसान का आकलन, फायर ब्रिगेड ने कड़ी मशक्कत के बाद पाया काबू

» स्वराज इंडिया न्यूज़ ब्यूरो

रसूलाबाद, कानपुर देहात। थाना क्षेत्र के तिश्ती गांव में मंगलवार दोपहर बाद अचानक लगी आग ने किसानों की मेहनत पर पानी फेर दिया। अज्ञात कारणों से लगी इस भीषण आग में करीब 30 बीघा गेहूं की खड़ी फसल जलकर पूरी तरह राख हो गई।

बताया गया कि दोपहर के समय अचानक खेतों में आग लग गई, जो तेज हवा के चलते तेजी से फैलती चली गई और देखते ही देखते विकराल रूप धारण कर लिया। आग की चपेट में आकर जगदेव, शिवस्वरूप, नरेंद्र सिंह, दिलीप तिवारी, छोटे दुबे, रामलखन सहित अन्य किसानों की फसल जलकर नष्ट हो गई। इसमें जगदेव व शिवस्वरूप की करीब 5 बीघा, नरेंद्र सिंह की 6 बीघा, दिलीप तिवारी की 1 बीघा तथा अन्य किसानों की कई बीघा फसल जलने की बात सामने आई है।

आग की तेज लपटें उठती देख गांव में अफरा-तफरी मच गई। ग्रामीणों ने तत्काल निजी संसाधनों के सहारे आग बुझाने का प्रयास शुरू किया और साथ ही फायर ब्रिगेड को सूचना दी। मौके पर पहुंची फायर ब्रिगेड टीम ने ग्रामीणों के सहयोग से कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया।

घटना की सूचना मिलने पर प्रशासन भी सक्रिय हुआ। तहसीलदार संतोष कुमार के निर्देश पर लेखपाल मौके पर पहुंचा और नुकसान का आकलन कर रिपोर्ट तैयार की जा रही है।

फिलहाल आग लगने के कारणों का स्पष्ट पता नहीं चल सका है, जिससे किसानों में चिंता का माहौल बना हुआ है।

अम्बेडकर जयंती पर देर रात तक गूंजा जय भीम, निकलीं शोभायात्राएं

» जगह-जगह आयोजित हुई रैलियाँ, युवाओं में दिखा जबरदस्त उत्साह

» एसडीएम व सीओ ने संभाली कमान, सुरक्षा व्यवस्था रही चाक-चौबंद

» स्वराज इंडिया न्यूज़ ब्यूरो

कानपुर देहात। संविधान निर्माता भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती पूरे क्षेत्र में हर्षोल्लास और उत्साह के साथ मनाई गई। देर रात तक चले कार्यक्रमों में गांव-गांव शोभायात्राएं निकाली गईं, जिनमें बड़ी संख्या में युवाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। जगह-जगह रैलियों और आयोजनों के माध्यम से बाबा साहब के विचारों का प्रचार-प्रसार किया गया तथा मिष्ठान वितरण कर लोगों ने खुशी जाहिर की।

तहसील क्षेत्र के असालतगंज, पूरनपुरवा, अंता, गुंदैला, पाल नगर समेत कई गांवों में अंबेडकर जयंती धूमधाम से मनाई गई। कार्यक्रमों में शामिल लोगों ने बाबा साहब के योगदान को याद करते हुए उनके बताए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया।

आजाद समाज पार्टी के जिला प्रभारी जगजीत संखवार ने कहा कि बाबा साहब ने शोषित, वंचित और पीड़ित वर्ग को उनका अधिकार दिलाने का कार्य किया। आज समाज का अंतिम व्यक्ति भी सम्मानपूर्वक जीवन जी पा रहा है, तो यह भारतीय संविधान की देन है।

उन्होंने कहा कि बाबा साहब के विचारों और मिशन को जन-जन तक पहुंचाना ही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।इस अवसर पर विनोद दोहरे, सूरजपाल गौतम, सतीश पाल, धर्मेंद्र गौतम, श्रीचंद्र संखवार, शीलू संखवार, सतनाम सिंह, ग्राम प्रधान संजीव पाल, विनोद पाल सहित बड़ी संख्या में क्षेत्रीय लोग मौजूद रहे और कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी निभाई।वहीं, सुरक्षा व्यवस्था को लेकर प्रशासन पूरी तरह सतर्क नजर आया। उपजिलाधिकारी सर्वेश सिंह और पुलिस क्षेत्राधिकारी आलोक कुमार ने भारी पुलिस बल के साथ क्षेत्र में गश्त कर स्थिति का जायजा लिया। पाल नगर स्थित अंबेडकर पार्क पहुंचकर अधिकारियों ने बाबा साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की और सुरक्षा व्यवस्था का निरीक्षण किया।

अंबेडकर प्रतिमा हटाने पर भड़की हिंसा, पथराव में 20 पुलिसकर्मी घायल, कई वाहन फूंके

» बांकेगंज में प्रतिमा स्थापना को लेकर विवाद ने लिया उग्र रूप

» महिलाओं ने लगाया लाठीचार्ज का आरोप, भारी पुलिस बल तैनात

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

लखीमपुर खीरी। मैलानी थाना क्षेत्र के बांकेगंज कस्बे में डॉ. भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा को हटाने को लेकर मंगलवार को शुरू हुआ विवाद देखते ही देखते हिंसक झड़प में बदल गया। आक्रोशित ग्रामीणों ने पुलिस पर पथराव किया और कई वाहनों में आग लगा दी। इस दौरान करीब 20 पुलिसकर्मी घायल हो गए, जबकि थाना, पुलिस चौकी और अधिकारियों के वाहनों को भी नुकसान पहुंचा है। जानकारी के अनुसार, गांव में एक धार्मिक भंडारे का आयोजन चल रहा था। इसी बीच वर्षों से खाली पड़ी बौद्ध विहार की भूमि पर बाबा साहब की प्रतिमा स्थापित करने की तैयारी की गई। ग्राम प्रधान वीरेंद्र गौतम की मौजूदगी में प्रतिमा स्थापना की प्रक्रिया शुरू हुई और उनके जाने के बाद ग्रामीणों ने प्रतिमा स्थापित कर दी।

घटना स्थल पर मौजूद डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल और एसपी ख्याति गर्ग

बताया जा रहा है कि प्रतिमा स्थापना के बाद ग्रामीण रैली निकालने चले गए, जिससे मौके पर केवल महिलाएं ही रह गईं। इसी दौरान स्थिति ने अचानक नया मोड़ ले लिया। ग्रामीणों का आरोप है कि बांकेगंज निवासी एक महिला पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचीं और प्रशासन ने प्रतिमा हटाने की कार्रवाई शुरू कर दी। इस दौरान प्रतिमा के खंडित होने की बात भी सामने आई है। मौके पर मौजूद महिलाओं का आरोप है कि जब उन्होंने प्रतिमा को बचाने का प्रयास किया, तो पुलिस ने लाठीचार्ज कर दिया, जिससे कई महिलाएं घायल हो गईं। इस घटना की खबर फैलते ही गांव में आक्रोश फैल गया और बड़ी संख्या में लोग एकत्र होकर विरोध प्रदर्शन करने लगे।देखते ही देखते भीड़ उग्र हो गई और पुलिस पर जमकर पथराव शुरू कर दिया। पथराव में करीब 20 पुलिसकर्मी घायल हो गए। वहीं थाना परिसर, पुलिस चौकी और एडिशनल एसपी की गाड़ियों को भी क्षति पहुंचाई गई। घटनास्थल पर मौजूद एक पत्रकार के भी हल्का घायल होने की सूचना है। स्थिति बिगड़ने पर जिला मुख्यालय से भारी पुलिस बल मौके पर भेजा गया। पूरे इलाके को छावनी में तब्दील कर दिया गया है और संवेदनशील स्थानों पर अतिरिक्त पुलिस बल तैनात कर दिया गया है। प्रशासनिक अधिकारियों का कहना है कि मामले की गंभीरता से जांच की जा रही है और सभी पक्षों के बयान दर्ज किए जा रहे हैं। दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई का आश्वासन दिया गया है। साथ ही आमजन से शांति और संयम बनाए रखने की अपील की गई है। मैलानी बांकेगंज मामले में दो केस दर्ज, एक मुकदमा महिला की ओर से और दूसरा पुलिस की तरफ से दर्ज की गई है। दोनों पक्षों से 20-20 लोगों की गिरफ्तारी की गई है, बाकी अन्य की पहचान हो रही है। एसडीएम गोला ने बताया कि कार्यक्रम के लिए कोई अनुमति नहीं ली गई थी, वीडियो और सीडीआर के आधार पर आरोपियों की पहचान कर कड़ी कार्रवाई होगी।

सतहरिया में मातृ स्वास्थ्य पर संकट

महिला अस्पताल के अभाव में हर दिन जोखिम में जिंदगी

दूरी, देरी और दुर्व्यवस्था बनी महिलाओं की सबसे बड़ी दुश्मन, जिम्मेदारों की चुप्पी

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

जौनपुर। मुंगराबादशाहपुर ब्लॉक के औद्योगिक क्षेत्र सतहरिया में महिला अस्पताल का अभाव अब एक गंभीर जनस्वास्थ्य संकट का रूप ले चुका है। यहां की हजारों महिलाओं को बुनियादी इलाज और प्रसव सेवाओं के लिए भटकना पड़ रहा है, जिससे न केवल उनकी सेहत खतरे में है बल्कि कई मामलों में जान तक चली जा रही है।

विडंबना यह है कि क्षेत्र के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) में पर्याप्त स्थान होने के बावजूद अब तक महिला अस्पताल की स्थापना नहीं की गई है।

इससे सरकारी दावों और जमीनी हकीकत के बीच बड़ा अंतर साफ नजर आता है।

हालात बद से बदतर :दूरी बन रही मौत का कारण

सतहरिया में प्रसव या गंभीर बीमारी की स्थिति में महिलाओं को 40-50 किलोमीटर दूर प्रयागराज या जौनपुर

जाना पड़ता है। इस दौरान रास्ते की खराब स्थिति, ट्रैफिक जाम और रेलवे फाटक बंद होने जैसी समस्याएं स्थिति को और भयावह बना देती हैं।

बार मरीज अस्पताल पहुंचने से पहले ही दम तोड़ देते हैं, जो स्वास्थ्य व्यवस्था की गंभीर विफलता को दर्शाता है।

सरकारी सुविधाओं के अभाव में महिलाएं मजबूरन निजी अस्पतालों और जांच केंद्रों का रुख करती हैं,

जहां उनसे मनमानी फीस वसूली जाती है। अल्ट्रासाउंड और अन्य जरूरी जांचों के लिए भी कोई सरकारी व्यवस्था उपलब्ध नहीं है।

औद्योगिक क्षेत्र फिर भी बुनियादी स्वास्थ्य सेवाएं क्यों नहीं?

सतहरिया एक प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र होने के बावजूद यहां बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव कई सवाल खड़े करता है। जहां एक ओर सरकार महिला सशक्तिकरण और मातृ मृत्यु दर कम करने के दावे करती है, वहीं दूसरी ओर इस क्षेत्र की महिलाएं प्राथमिक सुविधाओं के लिए भी जूझ रही हैं। सतहरिया में महिला अस्पताल की स्थापना अब केवल एक मांग नहीं, बल्कि जरूरत बन चुकी है।

सामाजिक असहजता भी बड़ी समस्या

महिला चिकित्सकों की अनुपस्थिति में महिलाओं को पुरुष डॉक्टरों के सामने अपनी समस्याएं बताने में संकोच होता है। ग्रामीण परिवेश में यह एक बड़ी सामाजिक बाधा बन जाती है, जिसके कारण कई महिलाएं इलाज ही नहीं करा पातीं।

महिलाओं की आवाज

नगर के नई बाजार में पहले महिला अस्पताल किराए के भवन में चलता था, लेकिन उसे सीएचसी में समायोजित करने के बाद भी वह अस्पताल का रूप नहीं ले सका। यह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है।
अमलेश मौर्य
सतहरिया

इलाज के लिए 50 किलोमीटर दूर जाना पड़ता है। रास्ते में घंटों लग जाते हैं, कई बार मरीज की हालत बिगड़ जाती है। यहां महिला अस्पताल खुलना बेहद जरूरी है।
श्वेता पाण्डेय
सतहरिया

सरकारी अस्पताल में जांच की सुविधा नहीं है। अल्ट्रासाउंड जैसी जांच के लिए निजी सेंटरों पर भारी पैसा देना पड़ता है। जिससे हम लोगों को बहुत परेशानी होती है
आशा सिंह
सतहरिया

महिला डॉक्टर न होने से हमें पुरुष डॉक्टरों के सामने अपनी समस्या बताने में शर्म आती है। यह स्थिति बदलनी चाहिए।
रचना पाण्डेय
सतहरिया

प्रशासन की सफाई

डॉ. राजेश कुमार, प्रभारी चिकित्साधिकारी का कहना है कि÷महिला चिकित्सकों की कमी के कारण तैनाती नहीं हो पा रही है। बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए प्रयास किए जा रहे हैं।

अमेरिकी दबाव में झुका चीन, लौटाया टैंकर, वैश्विक समुद्री जंग की आहट

होर्मुज बना 'सीधी टक्कर' का डेंजर प्वाइंट

स्वराज इंडिया न्यूज डेस्क

नई दिल्ली। पश्चिम एशिया का सामरिक दिल माने जाने वाला स्ट्रेट आफ होर्मुज एक बार फिर महाशक्तियों की खींचतान का केंद्र बन गया है। ताजा घटनाक्रम में अमेरिकी दबाव के चलते चीन का तेल-रसायन टैंकर 'रिच स्टैरी' अचानक यू-टर्न लेने को मजबूर हो गया। यह सिर्फ एक जहाज की वापसी नहीं, बल्कि वैश्विक शक्ति संतुलन में उभरते बड़े बदलाव का संकेत है।

रॉयटर्स और शिपिंग ट्रैकिंग डेटा के अनुसार, यह टैंकर करीब 2.5 लाख बैरल मेथेनॉल लेकर खाड़ी से बाहर निकल चुका था, लेकिन अमेरिकी नाकेबंदी और निगरानी के दबाव में उसे फिर से होर्मुज की ओर लौटना पड़ा। यह जहाज पहले से ही इरान के साथ व्यापारिक संबंधों के कारण अमेरिकी प्रतिबंधों के दायरे में था। अमेरिकी सेंट्रल कमांड ने दावा किया है कि उसने ईरान से जुड़े समुद्री व्यापार पर 'प्रभावी नियंत्रण' स्थापित कर लिया है। चाबहार के पास दो अन्य टैंकरों को रोके जाने की खबर ने इस दावे को और मजबूत किया है।

दूसरी ओर, चीन ने इस कदम को 'अस्वीकार्य दबाव' बताया है। चीनी रक्षा मंत्री ने साफ शब्दों में कहा कि उनके जहाज इस मार्ग से गुजरते रहेंगे और किसी बाहरी हस्तक्षेप को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। यह बयान सीधे तौर पर युनाइटेड स्टेट्स को चुनौती माना जा रहा है। इसी बीच, ट्रंप ने बयान देकर हालात को और जटिल बना दिया। उन्होंने कहा कि ईरान के साथ जारी संघर्ष 'समाप्ति के करीब' है और जल्द ही वार्ता का दूसरा दौर हो सकता है। हालांकि जमीनी हालात इसके उलट ज्यादा तनावपूर्ण दिख रहे हैं।

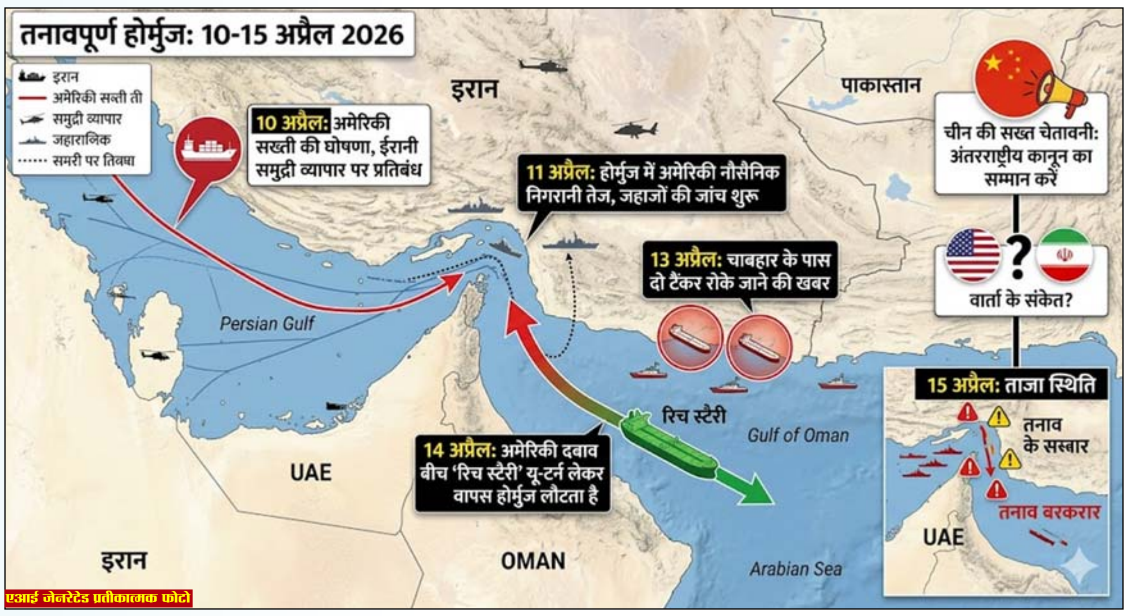

एआई जेनरेटेड प्रतीकात्मक फोटो

होर्मुज से मलक्का तक 'समुद्री शतरंज'

विशेषज्ञों का मानना है कि यह पूरा घटनाक्रम सिर्फ होर्मुज तक सीमित नहीं है। अमेरिका अब अपनी रणनीति को दक्षिण-पूर्व एशिया के स्ट्रेट आफ मलक्का तक विस्तार दे रहा है। हाल ही में अमेरिका और इंडोनेशिया के बीच हुए रक्षा समझौते को इसी रणनीति का हिस्सा माना जा रहा है। इस समझौते के तहत अमेरिकी सैन्य विमानों को इंडोनेशियाई हवाई क्षेत्र में उड़ान की अनुमति मिलना, मलक्का जलडमरूमध्य पर निगरानी और नियंत्रण को मजबूत करता है। यह वही मार्ग है जिससे चीन की ऊर्जा आपूर्ति का बड़ा हिस्सा गुजरता है। यही वजह है कि बीजिंग लंबे समय से 'मलक्का दुविधा' की बात करता रहा है।

भारत के लिए 'सुनहरा मौका'

इस पूरे समीकरण में भारत की भूमिका बेहद अहम हो गई है। अंडमान-निकोबार द्वीप समूह की रणनीतिक स्थिति भारत को मलक्का जलडमरूमध्य के करीब प्राकृतिक बढ़त देती है। कैंपबेल बे और अन्य सैन्य ठिकानों के जरिए भारत न सिर्फ समुद्री गतिविधियों पर नजर रख सकता है, बल्कि जरूरत पड़ने पर संतुलनकारी भूमिका भी निभा सकता है। अमेरिका के साथ बढ़ती साझेदारी और 'एक्ट ईस्ट' नीति इस दिशा में भारत को और मजबूत बना रही है।

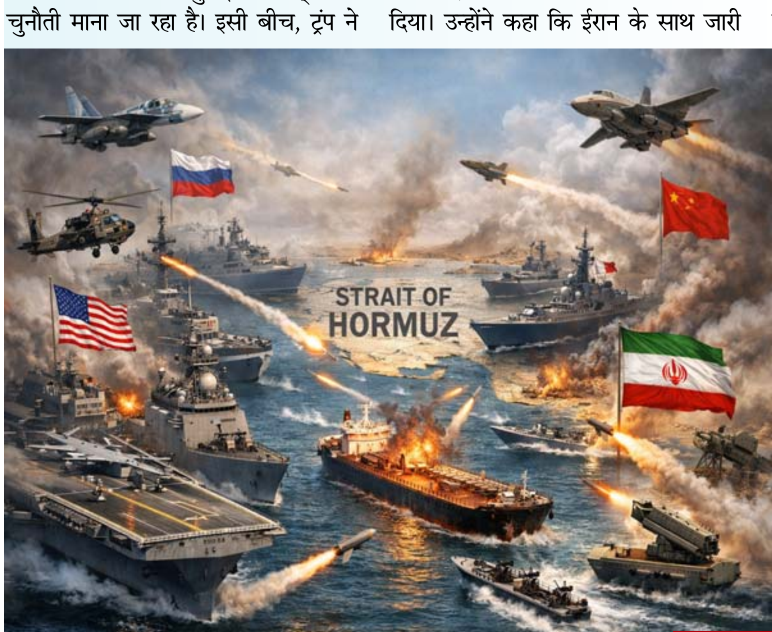

एआई जेनरेटेड प्रतीकात्मक फोटो

- नाकेबंदी, प्रतिबंध और रणनीतिक घेराबंदी के बीच स्ट्रेट आफ होर्मूज बना टकराव का मैदान
- यूनाइटेड बनाम चाइना के बीच 'समुद्री शतरंज' तेज, भारत के लिए उभरता रणनीतिक मौका

आगे होगा क्या?

मौजूदा हालात बेहद संवेदनशील हैं। एक तरफ अमेरिका अपनी सैन्य और आर्थिक ताकत के जरिए दबाव बना रहा है, तो दूसरी ओर चीन खुली चुनौती दे रहा है। इरान भी इस समीकरण में अहम भूमिका निभा रहा है। अगर हालात काबू में नहीं आए, तो यह टकराव सिर्फ समुद्र तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था और कूटनीति को भी हिला सकता है। फिलहाल 'रिच स्टैरी' की वापसी ने यह साफ कर दिया है कि समुद्र में अब सिर्फ व्यापार नहीं, बल्कि ताकत का खेल चल रहा है और यह खेल आने वाले दिनों में और खतरनाक हो सकता है।

क्या है होर्मुज का असली महत्व?

- दुनिया के लगभग 20% तेल की सप्लाई इसी रास्ते से
- खाड़ी देशों की अर्थव्यवस्था की जीवनरेखा
- किसी भी सैन्य टकराव का सीधा असर वैश्विक तेल कीमतों पर

अमेरिका की रणनीति क्या है?

- ईरान को आर्थिक रूप से अलग-थलग करना
- चीन की ऊर्जा सप्लाई चेन पर दबाव बनाना
- समुद्री मार्गों पर सैन्य वर्चस्व कायम करना

चीन की चिंता क्यों बढ़ी?

- ऊर्जा आयात का बड़ा हिस्सा समुद्री मार्ग पर निर्भर
- 'मलक्का दुविधा' से पहले ही परेशान
- अमेरिकी घेराबंदी से रणनीतिक जोखिम कई गुना बढ़ा

भारत के लिए क्या अवसर?

- हिंद महासागर में प्रभाव बढ़ाने का मौका
- अमेरिका के साथ रक्षा सहयोग मजबूत करने का अवसर
- क्षेत्रीय संतुलन में 'निर्णायक शक्ति' बनने की संभावना

- अमेरिकी दबाव में चीनी टैंकर 'रिच स्टैरी' को बीच रास्ते से लौटना पड़ा
- इरान से जुड़े व्यापार पर अमेरिकी सख्ती और तेज
- डोनाल्ड ट्रंप का दावा, 'युद्ध खत्म होने के करीब'
- चीन की चेतावनी, 'हमारी समुद्री आवाजाही नहीं रुकेगी'
- होर्मुज से मलक्का तक अमेरिका की 'डबल स्ट्रैटेजी' सक्रिय
- हिंद महासागर में भारत की भूमिका अचानक अहम हुई

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक सपना देवी द्वारा हर्षिता प्रिंटर्स 127/875, साकेत नगर, कानपुर नगर- (उप्र) से मुद्रित व 119/13, दर्शनपुरवा, कानपुर नगर- 208012 (उप्र) से प्रकाशित। संपादक: अनूप कुमार RNI No.: UPHIN/2023/86769 ❍ Email: swarajindia2023@gmail.com ❍ Mob: 7800009853, ❍ Website: www.swarajindianews.com ❍ (समस्त वाद-विवाद कानपुर न्यायालय के अधीन होंगे) प्रधान संपादक: पुरुषोत्तम द्विवेदी

ई-पेपर पढ़ने के लिए क्लिक करें
https://epaper.swarajindianews.com